International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in March 2024, ISSN -2393-8048

# वेदसंहिताओं में सूर्यदेवता

डॉ मुनीश कुमार, सहायक प्राध्यापक, संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय, सिवानी

वेदों को भारतीय संस्कृति का प्राण माना जाता है। प्राचीन मान्यता के अनुसार इन वेदों का आविर्भाव ब्रह्म के नि:श्वास से हुआ – **एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य नि:श्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्वाँगिरस:।**[1] यही कारण है कि आर्य वेदों को अपौरुषेय वाक् मानते हैं।[2] इन वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय देवता है। वेद की सभी संहिताओं में मुख्य रूप से देवताओं की स्तुतियाँ की गयी हैं। वैदिक आर्यों का देवताओं में दृढ़ विश्वास था, उनकी कल्पना में यह समस्त संसार तीन लोकों में विभक्त है - पृथ्वीलोक,अंतरिक्षलोक और द्युलोक। ये सभी लोक ईश्वरद्वारा व्याप्त हैं।[3] इस ईश्वर की आराधना विभिन्न देवताओं के रूप में उपलब्ध होती है। वस्तुत: तो देवता एक ही है परन्तु गुणभेद व शक्तिभेद के कारण अनेकत्व की कल्पना की गयी है -

**ॐ तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा:।**
**तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता आप: स प्रजापति:।।**[4]
**एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।**[5]

इन देवताओं में अग्नि, वायु, इंद्र, रुद्र, मित्र, वरुण, विष्णु, सविता, सूर्य ,पूषन्, अश्विनौ, मरुत् एवं ऊषस् आदि प्रमुख हैं। भारतीय परम्परा में अग्नि और इन्द्रदेवता के पश्चात् सर्वाधिक पूजनीय देवता सूर्य माने जाते हैं। प्रसिद्ध नैरुक्ताचार्य यास्क के अनुसार सूर्य द्युलोकस्थानीय देवता हैं।[6] सूर्यदेवता का सम्बन्ध सविता, पूषन् और मित्र से है। ये देवता सूर्य के रश्मि मण्डल में सहचारी हैं अथवा इन्हें सूर्यदेवता का ही रूप कहा जा सकता है। यहाँ सूर्यदेवता के विवेचन में इन देवताओं का प्रतिपादन करना सर्वथा अपेक्षित है क्योंकि इनके विना सूर्यदेवता के स्वरूप का वर्णन अपूर्ण सिद्ध होगा। सर्वप्रथम सौरमण्डल के प्रमुख देवता सविता का वर्णन किया जा रहा है – **सविता सर्वभावानां सर्वभावांश्च सूयते। सवनात्प्रेरणाच्चैव सविता तेन चोच्यते।। (बृहद्योगियाज्ञवल्क्य 9/55-56)**

**सविता देवता –** ऋग्वेद के लगभग 11 सूक्तों में सविता देवता की स्तुति कीगयी है। सविता का अर्थ होता है –प्रेरक। सविता शब्द सू (षू) धातु से तृच्प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है।[7] शब्दकल्पद्रुम में सविता शब्द का अर्थ किया गया है - **सर्व्वलोकप्रसवनात्सविता तु कीर्त्यते।**[8]
अन्य स्थलों पर भी सविता पद इन्हीं अर्थों में द्योतित हुआ है। यहाँ कुछ उद्धरण द्रष्टव्य हैं -

**सविता सर्वस्य प्रसविता।**[9] **सर्वस्यजगत: प्रसविता सविता।**[10] **प्रजानां प्रसवनात्सवितेति निगद्यते।**[11] **सविता देवानां प्रसविता।**[12]

इन सब उद्धरणों से ध्वनित होता है कि संसार, प्रजाओं, देवों अथवा सभी लोकों को प्रेरित और उत्पन्न करने वाले देव सविता कहलाते हैं। मानवीय आकृति के रूप में ये हिरण्यमय देव हैं, इनके हाथ[13], नेत्र[14] और जिह्वा आदि सब हिरण्यमय हैं। इनके सुवर्णमय रथ को श्वेत पैरों वाले दो घोड़े खींचते हैं जो सभी प्राणियों को विशेष रूप से प्रकाशित करते हैं

**विजनाञ्छ्यावा शितिपादो अख्यन्नथं हिरण्यप्रउगं वहन्त:।**
**शश्वद्विश: सवितुर्दैवस्योपस्थे विश्वा भुवनानितस्थु:।।**[15]

अन्धकारमय लोकों से लौटते हुए तथा सकल भुवनों का निरीक्षण करते हुए सविता देवता मनुष्यों और देवों
के कल्याण को वहन करते हैं-

**आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
**हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।**[16]

सविता देवता अति महिमाशाली देवता माने जाते हैं। इनकी महिमा इस बात से द्योतित होती है कि हिन्दूधर्म में इनकी आराधना त्रिकाल संध्या के रूप में की जाती है, सविता देवता को समर्पित यह मन्त्र भारतीय परम्परा में सर्वाधिक समादृत है – **तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।**[17] ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद तीनों वेद एकमत होकर सविता देवता की महिमा का गान करते हैं। यह देवता केवल प्रकाशक, प्रेरक और धारक ही नहीं अपितु रोगों और पापों का भी शमन करने वाला है। इस विषय में निम्नलिखित मन्त्रद्रष्टव्य हैं –
**विश्वानि देव सवितर्दुरितानिव् परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।।**[18] अर्थात् समस्त संसार को उत्पन्न करने वाले हे सविता देवता ! आप हमारे सब पापों को हमसे दूर कर दीजिये तथा जो कल्याण अथवा श्रेय है, मंगल है उसे विश्व के सब प्राणियों के लिये चारों ओर से ले आयें।

**अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति।**[19]

अर्थात् यह सविता देवता रोगादि बाधाओं को दूर करता है और सूर्य के प्रति जाता है।सविता देवता रात्रि में स्मरण किये जाते हुए राक्षसों और यातना देने वाले (यातुधान) को भी दूर करते हैं –

**अपसेधन्रक्षसो यातुधानानस्थाद् देव: प्रतिदोषं गृणान:।**[20]

वेद में सविता देवता से अभ्यर्थना करते हुए ऋषि के ये उद्गार द्रष्टव्य हैं -

**अचिति यञ्चकृमा देव्ये जने दीनैर्दक्षै: प्रभूती पूरुषत्वता।**
**देवेषु च त्वं सवितर्मानुषेषु च त्वं नोऽत्र सुवतादनागस:।।**[21]

अर्थात् हे सविता देवता आपका जीवन दिव्य गुणों से भरा हुआ है। हम अज्ञानवश आपके प्रति अपराध एवं निष्ठा में प्रमाद कर देते हैं, हमारे पुत्र-पौत्रादि अपराध कर देते हैं फलत: हम अपराधी हो जाते हैं। आप हमारे उन सब पापों के अपराधों को क्षमा कर हमें पापों से मुक्त कर दीजिये।

**पूषन्** – ये सौर मण्डल के देवता कहे जाते हैं। पूषन् शब्द पूष वृद्धौ धातु से कनिन् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है जिसका अर्थ होता है – पोषण करने वाला। आचार्य यास्क ने पूषन् शब्द की निरुक्ति करते हुए कहा – **यद्रश्मिपोषम् पुष्यति तत् पूषाभवति।**[22] अर्थात् जो अपनी रश्मियों से सबका पोषण करता है वह पूषा होता है। इसकी रश्मियाँ सबका पोषण करती हैं, इसलिये इसको पूषा कहते हैं। यह सूर्य की शक्ति का प्रतीक है। ऋग्वेद के लगभग आठ सूक्तों में पूषन् देवता की स्तुति उपलब्ध होती है जिसमें से पांच सूक्त तो छठे मण्डल से ही हैं। यद्यपि मानवीय आकृति के रूप में इनका कोई विशेष वर्णन नहीं मिलता तथापि वेद साहित्य में इनके विषय में रोचक जानकारी उपलब्ध होती है। पूषा एक महान् देवता हैं, ये चराचर जगत् के स्वामी हैं और मार्गों के रक्षक कहे गए हैं, इसलिये इनका एक विशेषण **पथस्पति** भी है –

**वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये। धिये पूषन्न युज्महि ।।**[23]

यह एक शक्तिशाली देवता है। इनके आयुध अति तीक्ष्ण हैं जो कभी नष्ट नहीं होते, इनका तरकश कभी खाली नहीं होता और उसके आयुध की धार कभी कुंठित नहीं होती। । ये सदैव हवि प्रदान करने वाले की रक्षा करते

हैं – **पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते। नो अस्यव्यथते पवि:** ।।[24] पूषा देवता सोम पीसने वाले यजमान

की तथा स्तुति करने वाले स्तोता के पशुओं के रक्षक हैं वे उनकी गायों की रक्षा के लिये पीछे-पीछे चलते हैं -

**पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वत:। आस्माकं स्तुवतामुप ।।**[25]

तैत्तिरीय ब्राह्मण में पूषा देवताकेलिये **'पशुपा'** विशेषण दिया गया है।[26] ये अत्यधिक उदार शक्तिशाली परोपकारी और बुद्धिमान देवता हैं पूषा से सम्बद्ध सूक्तों के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि पूषा सूर्य के ही पोषक तत्त्व के प्रतीक हैं। यजुर्वेद के निम्नलिखित मंत्र में ऋषि पूषन् देवता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं – 'हे विश्व के पोषण करने वाले, एकाकी गमन करने वाले, संसार के नियामक प्रजापति पुत्र पूषन् ! आप अपनी रश्मियों का व्यूह हटा लें, अपने तेज को समेट लें जिससे मैं आपके अत्यंत कल्याणमय रूप को देख सकूं। यह आदित्य मंडल में स्थित पुरुष मैं हूँ–

**हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।। पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह। तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं यत्ते पश्यामि योऽसावसौ पूरुष: सोऽहमस्मि ।।**[27]

इससे स्पष्ट होता है कि वेदसंहिताओं में पूषादेवता का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

**मित्रदेवता** – सूर्य के रश्मिमण्डल में ये तृतीय देवता हैं। ऋग्वेद में पूषा की अपेक्षा मित्र देवता के सूक्त अत्यल्प हैं। इनका स्वतंत्र रूप से केवल एक ही सूक्त मिलता है। अन्यत्र इनका उल्लेख वरुण देवता के साथ उपलब्ध होता है। यह देवता सभी मनुष्यों को उद्यमी बनता है, निमेषरहित होकर अनुग्रह की दृष्टि से कृषकों को देखता है -

**मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।**
**मित्र:कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ॥**[28]

मित्र देवता जिस मनुष्य कि रक्षा करते हैं, उस मनुष्य को न तो कोई मार सकता है और न ही कोई हरा सकता है, जिस मनुष्य को मित्र देवता का संरक्षण प्राप्त होता है, उसको पाप दूर या पास कहीं से भी स्पर्श नहीं कर सकता।[29] यह सदैव नमस्कार करने योग्य है, सम्पूर्ण जगत् का प्रकाशक एवं राजा है, संसार का रचयिता है।[30] इसके अधिकार में ही ये दिवलोक और पृथिवीलोक रहते हैं।[31] अन्य गुणों में इसका चित्रण सविता देवता के समान मिलता है। **विश्वमाभासि रोचनम् (ऋक् 1/50/4)**

**सूर्यदेवता** - इस सौरमंडल में भगवान् सूर्य का सर्वोच्च स्थान है। सूर्य इस संसार में पृथिवी से भी अधिक उपकारक देवता हैं। उनकी स्थिति और स्थान ब्रह्माण्ड में भगवत्तुल्य है। स्वयं वेदभगवान् ने ब्रह्म की तुलना सूर्य से की है – **ब्रह्मसूर्यसमं ज्योति:।**[32] यह स्वयं प्रकाशमान् और ज्योतिर्मय देवता हैं। सूर्य शब्द[33] सृ गतौ अथवा षू प्रेरणे धातु से क्यप् और रुट् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ होता है – **सरति गच्छति आकाश इति सूर्य:** अर्थात् जो आकाश में भ्रमण करता है उसे सूर्य कहते हैं। **अथवा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति इति सूर्य:** संपूर्ण जगत् को अपने कर्मों में प्रवृत्त करने के कारण इसे सूर्य कहते हैं। निरुक्तकार ने सूर्य शब्द का निर्वचन इस प्रकार किया है – **सूर्य: सतेर्वा सुवतेर्वा (निरुक्त 12-2-14)।** इसकी उत्पत्ति विराट् पुरुष के नेत्रों से बतायी गयी है।[34] सूर्य स्वयंभू हैं, सबको प्रकाशित करते हैं, वर्चस् और ज्योति प्रदान करते हैं, ज्योतियों में श्रेष्ठतम ज्योति हैं जो भी इनका अनुसरण करेगा वो भी इनके समान वर्चस्वी बनेगा - **स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि। सूर्यस्यावृतमनवावर्ते। ( यजुर्वेद 2/26),**

**इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां जयोतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत्।**
**विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ॥ (ऋक् 10/170/3)**

हमारे पूर्वज ऋषियों ने सूर्य देवता के प्रति अपनी अपार श्रद्धा को अनेक स्तुतियों और प्रार्थनाओं में अभिव्यक्त किया जिनका यहाँ केवल दिग्दर्शन किया गया है। सूर्य देवता सर्वान्तर्यामी देवता है, यह सकल विश्व का प्रकाशक, प्रेरक एवं अनंत तेज का भंडार है, यह सब प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों का द्रष्टा, मित्रावरुण और अग्नि का नेत्र तथा सम्पूर्ण चराचर जगत् का आत्मा है –

**चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने:।**
**आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्यात्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥**[35]

सूर्य अंधकार का नाश करते हैं तथा अपने प्रकाश से समस्त प्राणियों में स्फूर्ति उत्पन्न करते हैं, ये सकल दुरितों और दु:स्वपनों को नाश करने में समर्थ हैं। सूर्य से अन्न,यज्ञ और स्वास्थ्य प्राप्त होता है। ऋग्वेद के निम्नांकित मन्त्र में अभितपा ऋषि की यह प्रार्थना द्रष्टव्य है – **येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना। तेनास्मद् विश्वामनिरामनाहुतिमपामीवामप दुष्वप्न्यं सुव ॥**[36] सूर्य देवता दृश्य एवं अदृश्य

राक्षसों और रजनीचरों का विनाश करते हैं।[36] वेदों के अध्ययन से विदित होता का सूर्य का प्रकाश पीलिया और हृदय रोगों में विशेष लाभप्रद होता है।[37] इसके साथ- साथ सूर्य देवता का सम्बन्ध नेत्र रोगों से भी माना गया है, सूर्य तथा नेत्रों के घनिष्ठ सम्बन्ध को ब्रह्मा ऋषि ने इन अमर शब्दों में व्यक्त किया है - **सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्। (अथर्ववेद 5/9/7), सूर्यचक्षुषामधिपतिः स मावतु। (अथर्ववेद 5-24-9)** वेद की ऋचाओं का साक्षात्कार करने वाले उन ऋषियों ने यह अनुभव कर लिया था कि समस्त लोकों को सूर्य ने धारण कर रखा है। ऋषि प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे सूर्या! आप ज्योति से चमकते हुए द्यौलोक के सुन्दर और सुखद स्थान पर पहुँचे हैं, आप सब देवताओं के हितकारी हो, आपने ही इन लोक – लोकान्तरों को धारण किया हुआ है – **विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वरगच्छो रचनं दिवः। येनेमा विश्वा भुवनान्याभृता विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता ॥**[38] वेदसंहिताओं में सूर्य को रोगनाशक तथा आरोग्य का देवता माना गया है- **आरोग्यं भास्करदिच्छेत्**। वेदों में ऐसी प्रार्थनायें भी उपलब्ध होती हैं जिनमें न केवल सूर्य के गुणों की स्तुति है अपितु प्रसंगवश सूर्य से लम्बी आयु की कामनायें की गयी हैं। अथर्ववेद में ऋषि सूर्य से प्रार्थना करता हुआ कहता है–

**दिवस्पृष्ठे धावमानं सुपर्णमदित्याः पुत्रं नाथकाम उपयामि भीतः।**
**स नः सूर्य प्रतिर दीर्घमायुर्मारिषाम समतौ ते स्याम ॥**[39]

अर्थात् मैं द्यौ की पीठ पर उडते हुए अदिति के पुत्र, सुन्दर पक्षी सूर्य के पास कुछ मांगने के लिये डरता हुआ जाता हूँ। हे सूर्यदेव ! आप हमारी आयु खूब लम्बी कीजिये। हम कोई कष्ट न पावें, हम पर अपनी कृपा कीजिये। इसी प्रकार यजुर्वेद में एक ऋषि सूर्य की स्तुति करता हुआ कहता है

**– तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।**
**पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् शृणुयाम शरदः शतं**
**शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम**
**शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥**[40]

वस्तुतः भगवान् सूर्य उस परमेश्वर का ही अपर नाम जिसका महिमा वेदों में पुनः- पुनः गायी गयी है। वही इस संसार का एकमात्र नियामक, प्रेरक, प्रसविता, उत्पादक, विनाशक और उद्धारक परमात्मा है। उस सर्व अंतर्यामी प्रेरक परमात्मा सूर्या का यह ईश्वरत्व और महत्त्व है कि वे प्रारंभ किये हुए अथवा अपरिसमाप्त कृत्यादि कर्मों को छोड़कर अस्ताचल जाते समय अपनी किरणों को इस लोक से अपने में समेट लेते हैं।[41] ऐसे परम प्रिय सूर्य देव हम सबके लिए मधुर हों –

**मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥**

**सन्दर्भ –**


1. बृहदारण्यक 2/4/102
2. अनादिनिधना नित्या वागुतसृष्टा स्वयंभुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥ (महाभारत शांतिपर्व 23/01/56)
3. ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। ( शुक्लयजुर्वेद 40/1)
4. शुक्लयजुर्वेद 31/18
5. ऋग्वेद 1/64/46
6. तिस्र: एव देवता इति निरुक्ताः। अग्निः पृथिवीस्थानो वायुर्वा इन्द्रो वाऽन्तरिक्षस्थानः सूर्यो द्युस्थानः ॥ (निरुक्त 7/ 2)
7. सविता शब्द तीन धातुओं से बनता है – सू प्राणिगर्भविमोचने (अदादिगण), सू प्रणिप्रसवे (दिवादिगण), तथा सू प्रेरणे धातु से तृच् प्रत्यय करने पर।
8. शब्दकल्पद्रुम 2/4/80
9. निरुक्त 10/32
10. विष्णुसहस्रनामस्तोत्र श्लोक 107 पर आचार्य शंकर
11. विष्णुपुराण 1/30/15
12. शतपथ ब्राह्मण 1/1/2/17
13. हिरण्यहस्तः असुरः सुनीथः (ऋग्वेद 1/35/10), हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि----॥ (ऋग्वेद 1/35/9)
14. हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् (ऋग्वेद 1/35/8)
15. हिरण्यजिह्वः सुवितायनव्यसे (ऋग्वेद 6/71/3)
16. (ऋग्वेद 1/35/2)
17. ऋग्वेद 3/62/10, शुक्लयजुर्वेद 36/3, सामवेद 13/3/3
18. ऋग्वेद 5/82/5, शुक्लयजुर्वेद 30/3
19. ऋग्वेद 1/35/9
20. ऋग्वेद 1/35/10
21. ऋग्वेद 4/54/3
22. निरुक्त 12/27
23. ऋग्वेद 6/53/1
24. ऋग्वेद 6/54/3
25. ऋग्वेद 6/54/6
26. तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/1/2/10
27. शुक्लयजुर्वेद 40/16
28. ऋग्वेद 3/59/1
29. न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात्। (ऋग्वेद 3/59/2)
30. अयं मित्रो नमस्यः सुषेवो राजा (ऋग्वेद 3/59/4)
31. अभि य़ो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्थाः। अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥ (3/59/7)
32. ब्रह्मसूर्यसमं ज्योतिः (शुक्लयजुर्वेद 23/48)
33. राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः (पाणिनीय सूत्र 3/1/114) से निपातन होकर भी सूर्य शब्द सिद्ध होता है।
34. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो सूर्योऽजायत (ऋग्वेद 10/90/13)
35. ऋग्वेद 1/115/1
36. ऋग्वेद 10/37/14
37. उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृदरोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥ (ऋग्वेद 1/50/11)
38. उत पुरस्तात् सूर्यं एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा। अदृष्टान्त्सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यः ॥(ऋग्वेद 1/191/8)
39. अथर्ववेद 13/2/37
40. शुक्लयजुर्वेद 36/24
41. तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥